श्री
सरस्वती वंदना

४ हिंदी और १ संस्कृत वंदना का संकलन

© www.motivationalstoriesinhindi.in

1

सरस्वती वंदना

वर दे, वीणावादिनि वरदे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!
काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!
नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद-मंद्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

2

सरस्वती वंदना

हे शारदे माँ हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमे तार दे माँ।

तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे, हर शब्द तेरा है, हर गीत तुझसे।

हम है अकेले हम है अधूरे, तेरी शरण में हमे तार दे माँ।

हे शारदे माँ हे शारदे माँ,

गुणियों ने समझी मुनियों ने जानी, वेदों की भाषा पुराणों की वाणी।

हम भी वो समझे हम भी वो जाने, विद्या का हमको अधिकार दे माँ।

हे शारदे माँ हे शारदे माँ,

श्वेतवर्णी कमल पे विराजे, हांथों में बीणा मुकुट सर पे साजे।

अज्ञानता के मिटा दे अंधेरे, उजालों का हमको संसार दे मां॥

हे शारदे मां, हे शारदे माँ

3

सरस्वती वंदना

मुझको नवल उत्थान दो

माँ सरस्वती वरदान दो.

तेरी करूं माँ प्रार्थना .

पूरी करो माँ साधना

नव गति नवल लय ताल दो

माँ सरस्वती वरदान दो...

मुझको नवल उत्थान दो

माँ सरस्वती वरदान दो

माया मुझे नहीं छल सके...

विद्या विनय का ज्ञान दो

माँ सरस्वती वरदान दो .

मुझको नवल उत्थान दो

माँ सरस्वती वरदान दो ..

4

सरस्वती वंदना

श्लोक

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी,

विद्यारम्भं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।

माँ शारदे कहाँ तू,

वीणा बजा रही हैं,

किस मंजु ज्ञान से तू,

जग को लुभा रही हैं ॥

किस भाव में भवानी,

तू मग्न हो रही है,

विनती नहीं हमारी,

क्यों माँ तू सुन रही है । ..x2

हम दीन बाल कब से,

विनती सुना रहें हैं,

चरणों में तेरे माता,

हम सर झुका रहे हैं,

हम सर झुका रहे हैं ।

॥ मां शारदे कहाँ तू, वीणा...॥

अज्ञान तुम हमारा,

माँ शीघ्र दूर कर दो,

द्रुत ज्ञान शुभ्र हम में,

माँ शारदे तू भर दे । ..x2

बालक सभी जगत के,

सूत मात हैं तुम्हारे,

प्राणों से प्रिय है हम,

तेरे पुत्र सब दुलारे,

तेरे पुत्र सब दुलारे ।

॥ मां शारदे कहाँ तू, वीणा...॥

हमको दयामयी तू,
ले गोद में पढ़ाओ,
अमृत जगत का हमको,
माँ शारदे पिलाओ। ..x2

मातेश्वरी तू सुन ले,
सुंदर विनय हमारी,
करके दया तू हर ले,
बाधा जगत की सारी,
बाधा जगत की सारी।
॥ मां शारदे कहाँ तू, वीणा...॥

माँ शारदे कहाँ तू,
वीणा बजा रही हैं,
किस मंजु ज्ञान से तू,
जग को लुभा रही हैं॥

5

सरस्वती वंदना (संस्कृत)

सरस्वती मंत्र

सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारुपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ।।

रविरुद्र पितामह विष्णुनुतम, हरिचन्दन कुङ्कुम पङ्कयुतम ।

मुनिवृन्दगणेन्द्र समानयुतम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम ।।1।।

शशि शुद्ध सुधा हिमधामयुगम, शूरदाम्बरबिम्बसमानकरम ।

बहुरत्न मनोहर कान्तियुतम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम ।।2।।

कनकाब्जविभूषित भूतिपदम, भवभावविभाषित भिन्नपदम ।

प्रभुचित समाहित साधुपदम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम ।।3।।

भवसागरभंजन धीतिनुतम, प्रतिपादित सन्तति कारमिदम ।

विमलादिक शुद्ध-विशुद्धपदम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम।।4।।

मतिहीन जनाश्रय पादमिदम, सकलागम भाषित भिन्नपदम ।

परिकारित विश्वमनेकभवम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम ।।5।।

परिपूर्णमनेकं धामनिधिम, परमार्थ – विचार – विवेकनिधिम ।

सुरयादिक – सेवितपादतलम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम ॥6॥

सुरमौलि गणिद्युति शुभकरम, विषयादि महामय पापहरम ।

निजकान्ति – विलेसित चन्द्रसिवम, तव नौमि सरस्वति पादयुगम ॥7॥

गुणनेक कुलासित भीतिपदम, गुव गौरव गौर्वित सकलपदम ।

कमलोदर कोमल पादतलम । तव नौमि सरस्वति पादयुगम ॥8॥

For more such PDFs visit:

© *www.motivationalstoriesinhindi.in*